६ जरा प्यार से बोलना सीख लीजे

– *रमेश दत्त शर्मा*

विषय प्रवेश : प्रस्तुत गजल में गजलकार रमेश दत्त शर्मा दूसरों के प्रति व्यवहार के बारे में प्रेरणा दे रहे हैं। उनका मानना है कि हमें प्यार के साथ मधुर वचन बोलना, आवश्यकता के समय अवश्य बोलना, कुछ भी कहने से पहले अपनी बात पर विचार करना आदि गुणों को सीखना चाहिए।

कविता का भावार्थ

(१) वाणी में शहद ..... टोकना सीख लीजे।

हे मानव, अपनी वाणी में शहद जैसी मिठास घोलना सीखो। अर्थात मधुरभाषी बनो। तुम दूसरों से मीठे शब्दों में बात करो। जब भी बोलो, प्यार से बोलो। जब आवश्यकता हो, तभी बोलो। अनेक अवसरों पर आवश्यकता नहीं होती, तब भी हम सलाह-मशवरा दिया करते हैं। दोस्तो, चुप रहने के अनेक लाभ हैं। (ऊर्जा बचती है। समय बचता है। उस ऊर्जा और समय को किसी सकारात्मक कार्य में लगाया जा सकता है।)

किसी को कुछ कहने से पहले अपनी बात पर विचार करना और फिर बोलना सीखो। बोलने से पहले अपने शब्दों को तौलने की आदत बनाओ। ऐसा न हो कि आपकी बातें सामने वाले को दुख पहुँचाएँ। (तलवार से हुआ घाव देर-सवेर भर ही जाता है, किंतु कटु वाणी से हुआ घाव कभी नहीं भरता। समय-असमय हमें याद आ-आकर मार्मिक पीड़ा पहुँचाया करता है।) इसलिए यदि बातचीत के दौरान वैचारिक मतभेद हो, एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप की स्थिति उत्पन्न हो तो अपने आप को टोककर चुप रहना सीखो।

(२) पटाखे की तरह ..... खोलना सीख लीजे।

मित्र, किसी भी परिस्थिति में दूसरे पर क्रोध में फट पड़ने के स्थान पर प्यार का प्रकाश फैलाना कहीं उचित है, क्योंकि क्रोध की प्रतिक्रिया में क्रोध ही मिलेगा और बात हाथ से निकल जाएगी। (यह तथ्य कभी नहीं भूलना चाहिए कि कड़वी बोली हमेशा संबंध बिगाड़ती ही है।) कटु वचनों से काँटे ही मिलते हैं। कटु वचन ऐसे बीज हैं, जिनके फलस्वरूप काँटों रूपी फसल ही मिलती है। अतः कटु वचनों का त्याग करके मीठी बोली रूपी फूल के पौधे लगाओ।

यदि बात करते-करते कोई ऐसा प्रसंग आ जाए कि किसी की बात आपको या आपकी बात दूसरों को चुभने लगे, तो बात को प्यार के मोड़ पर लाना सीखो, ताकि वातावरण की कटुता दूर हो जाए। पर साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि हमें अनुचित बात पर होंठ सीकर यानी चुप भी नहीं बैठना चाहिए। कहीं, कोई, किसी प्रकार का अन्याय कर रहा हो या अत्याचार हो रहा हो तो उस समय चुप रह जाना भी अन्याय ही होगा। हमें ऐसी परिस्थिति में डटकर जोरदार शब्दों में उसका विरोध करना चाहिए।

१. प्रश्नोत्तर

पद्यांश क्र. १

प्रश्न. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. १ : **(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १४)**

वाणी में शहद घोलना सीख लीजे,
जरा प्यार से बोलना सीख लीजे।
चुप रहने के, यारों बड़े फायदे हैं,
जुबाँ वक्त पर खोलना सीख लीजे।

कुछ कहने से पहले जरा सोचिए,
खयालों को खुद तौलना सीख लीजे।
तू-तड़ाक हो या फिर हो तू-तू मैं-मैं,
अपने आपको टोकना सीख लीजे।

शब्दार्थ

यार – मित्र। **फायदे** – लाभ। **जुबाँ** – वाणी। **खयाल** – विचार। **टोकना** – रोकना, पूछताछ करना।

कृति १ : (आकलन कृति)

***(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :**

कवि ने इन बातों को सीख लेने को कहा है –

(१) ---------- (२) ----------

(३) ---------- (४) ----------

***(२) चुप रहने के चार फायदे लिखिए :**

(१) ---------- (२) ----------

(३) ---------- (४) ----------

***(३) कविता में आए इस अर्थ के शब्द लिखिए :**

(१) मधु (२) विचार।

(४) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(१) दूध/पानी/वाणी में शहद घोलना सीख लीजिए।

(२) चुप रहने के बहुत फायदे/तरीके/नुकसान हैं।

(३) सब्जी/खयालों/सामान को तौलना सीख लीजिए।

(४) अपने आप को टोकना/रोकना/सँभालना सीख लीजिए।

उत्तर

(१) कवि ने इन बातों को सीख लेने को कहा है –

(१) वाणी में शहद घोलना

(२) प्यार से बोलना

(३) खयालों को खुद तौलना

(४) अपने आप को टोकना

(२) (१) ऊर्जा की बचत होती है।

(२) समय की बचत होती है।

(३) मनमुटाव होने की संभावना कम हो जाती है।

(४) ऊर्जा को किसी सकारात्मक कार्य में लगाया जा सकता है।

(३) (१) मधु – शहद

(२) विचार – खयाल

(४) (१) वाणी में शहद घोलना सीख लीजिए।

(२) चुप रहने के बहुत फायदे हैं।

(३) खयालों को तौलना सीख लीजिए।

(४) अपने आप को टोकना सीख लीजिए।

कृति २ : (शब्द संपदा)

(१) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

(१) प्यार (२) फायदा (३) यार (४) सीख।

(२) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(१) सीखना (२) फायदा (३) वक्त (४) कहना।

उत्तर

(१) (१) प्यार = प्रेम (२) फायदा = लाभ

(३) यार = मित्र (४) सीख = शिक्षा।

(२) (१) सीखना × सिखाना (२) फायदा × नुकसान

(३) वक्त × बेवक्त (४) कहना × सुनना।

कृति ३ : (स्वमत अभिव्यक्ति)

*** 'वाणी की मधुरता सामने वाले का मन जीत लेती है'। इस तथ्य पर अपने विचार लिखिए।**

(कल्पना पल्लवन – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १४)

उत्तर : वाणी की शक्ति मनुष्य के लिए वरदान और अभिशाप दोनों है। वास्तव में मधुर वचन औषधि के समान होते हैं। जिस प्रकार एक रोगी का रोग दूर करने के लिए उसे औषधि दी जाती है, उसी प्रकार व्यक्ति कितनी ही परेशानियों से घिरा और तनावग्रस्त क्यों न हो, किसी के मधुर वचन उसकी परेशानी व तनाव दूर करने में सहायक होते हैं। मधुर वचनों में इतनी शक्ति और आकर्षण होता है कि मधुरभाषी सारे जग को अपना बना लेता है। पराए भी मित्र एवं हितैषी बन जाते हैं। वहीं कटुभाषी व्यक्ति अपने ही घर में पराया हो जाता है। मानव संसार में शब्दों का बड़ा महत्त्व होता है। अतः हमें एक-एक वचन सोच-समझकर बोलना चाहिए। वास्तव में मधुर वचन जहाँ दूसरों को आनंद की अनुभूति कराते हैं, वहीं हमारे मन को भी संतुष्टि और शीतलता से भर देते हैं। मीठी वाणी सफलता की कुंजी होती है। अतः हमें सदैव मीठा और उचित बोलना चाहिए। कहा भी गया है तुलसी मीठे वचन तै, सुख उपजत चहुँ ओर, वशीकरण के मंत्र हैं, तज दे वचन कठोर।

पद्यांश क्र. २

प्रश्न. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

पद्यांश क्र. २ : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १४)

पटाखे की तरह फटने से पहले,
रोशनी के रंग घोलना सीख लीजे।
कटु वचन तो सदा बोते हैं काँटे,
मीठी बोली के गुल रोपना सीख लीजे।।

बात बेबात कोई चुभने लगे तो,
बदलकर उसे मोड़ना सीख लीजे।
ये किसने कहा होंठ सीकर के बैठो,
जरूरत पे मुँह खोलना सीख लीजे।

शब्दार्थ

कटु – कड़वे। **वचन** – बोल। **गुल** – फूल।
रोपना – (पौधे) लगाना। **बेबात** – बिना बात।
सीकर – सिलकर। **मुँह खोलना** – अपनी बात कहना।

कृति १ : (आकलन कृति)

***(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :**

कवि ने इन बातों को सीख लेने को कहा है –

(१) ---------- (२) ----------
(३) ---------- (४) ----------

***(२) उत्तर लिखिए :**

(१) काँटे बोने वाले –
(२) चुभने वाली –
(३) फटने वाले –

***(३) कविता में आए इस अर्थ के शब्द लिखिए :**

(१) कड़वे (२) आवश्यकता।

(४) विधानों के सामने सत्य / असत्य लिखिए :

(१) कटु वचन सदा काँटे ही बोते हैं।
(२) रोशनी के रंग फैलाना अच्छा है।
(३) होंठ सीकर बैठना अच्छा है।
(४) जरूरत के समय बोलना सीखो।

उत्तर

(१) कवि ने इन बातों को सीख लेने को कहा है –
(१) रोशनी के रंग घोलना
(२) मीठी बोली के गुल रोपना
(३) अप्रिय बात बदलकर मोड़ना
(४) जरूरत पर ही मुँह खोलना।

(२) (१) काँटे बोने वाले – कटु वचन
(२) चुभने वाली – बात बेबात
(३) फटने वाले – पटाखे की तरह।

(३) (१) कड़वे – कटु (२) आवश्यकता – जरूरत।

(४) (१) कटु वचन सदा काँटे ही बोते हैं। – सत्य
(२) रोशनी के रंग फैलाना अच्छा है। – सत्य
(३) होंठ सीकर बैठना अच्छा है। – असत्य
(४) जरूरत के समय बोलना सीखो। – सत्य

कृति २ : (शब्द संपदा)

(१) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

(१) काँटे (२) जरूरत (३) रोशनी (४) मीठी।

(२) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए :

(१) पटाखा (२) बात (३) बोली (४) जरूरत।

उत्तर

(१) (१) काँटे × फूल (२) जरूरत × बेजरूरत
(३) रोशनी × स्याही (४) मीठी × कड़वी।

(२) (१) पटाखा – पटाखे (२) बात – बातें
(३) बोली – बोलियाँ (४) जरूरत – जरूरतें।

कृति ३ : (भावार्थ/स्वमत अभिव्यक्ति)

*** कविता की अंतिम चार पंक्तियों का अर्थ लिखिए।**

उत्तर : देखो, कविता का भावार्थ।

२. मौखिक कसौटी

प्रश्न. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(१) कवि ने क्या-क्या सीखने के लिए कहा है?
(२) कवि ने क्या-क्या न करने के लिए कहा है?

व्याकरण और भाषा ज्ञान

भाषा बिंदु : (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८)

*** उपसर्ग / प्रत्यय अलग करके मूल शब्द लिखिए :**

	मूल शब्द	प्रत्यय
(१) भारतीय	भारत	ईय
(२) आस्थावान	आस्था	वान
(३) व्यक्तित्व	व्यक्ति	त्व
(४) स्नेहिल	स्नेह	इल

	उपसर्ग	मूल शब्द
(५) बेबात	बे	बात
(६) निरादर	निर्	आदर
(७) प्रत्येक	प्रति	एक
(८) सुयोग	सु	योग

उपयोजित लेखन

*** • 'यातायात की समस्याएँ एवं उपाय' विषय पर निबंध लिखिए। (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १५)**

उत्तर : हमारे देश में शहरों की आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही है, लेकिन शहरों की आधारभूत संरचना का विकास उस अनुपात में नहीं हुआ है, जिसकी वजह से यातायात एक बड़ी समस्या बनकर उभरा है। यातायात के साधनों की भीड़ के कारण आजकल दुर्घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। आजकल शहरों से गाँवों तक सड़कों का जाल बिछा है, जिन पर वाहन दौड़ते रहते हैं। इन वाहनों की चपेट में आकर आए दिन बहुत से लोग मारे जाते हैं। वाहनों का धुआँ लोगों की साँस के साथ उनके फेफड़ों में जाता है, जिसके कारण श्वास संबंधी बीमारियाँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। आज मध्यम वर्गीय परिवारों में एक ही घर में कई-कई वाहनों का प्रयोग किया जाने लगा है। यदि परिवार के लोग एक ही स्थान पर जाने के लिए एक ही वाहन का प्रयोग करें तो सड़कों पर यातायात का दबाव कम होगा तथा दुर्घटनाओं की संभावना कम हो जाएगी। वाहनों की समय-समय पर जाँच, जल्दबाजी का त्याग, सड़क सुरक्षा संबंधी नियमों की जानकारी, उनका पालन, यातायात पुलिस की जागरूकता से यातायात की समस्या पर कुछ सीमा तक नियंत्रण पाया जा सकता है।

आकारिक मूल्यांकन

१. मौखिक कार्य :

- **समूह चर्चा :**

  कविता के आधार पर 'वाणी के उचित उपयोग' के बारे में आपस में चर्चा करो।

- **प्रत्यक्ष वाचन :**

  स्पष्ट शब्दों में हाव-भाव के साथ कविता पढ़ो।

२. उपक्रम/कृति/परियोजना :

- **स्वयं अध्ययन :**

  हिंदी साप्ताहिक पत्रिकाएँ / समाचार पत्रों से प्रेरक कथाओं का संकलन करो।